IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गाँधी के नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

आफरीन बानो
जे0आर0एफ0 (आई0सी0पी0आर0)
शोध छात्रा, दर्शनशास्त्र विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सार संक्षेप–

गाँधी जी ने केवल भारत में नहीं बल्कि पूरे विश्व में अपने नैतिक विचारों तथा मूल्यों के लिए जाने जाते है कि उन्होंने किस प्रकार विषम परिस्थितियों में भी नतिकता का त्याग नहीं किया तथा अपने मूल्यों व विचारों के बल पर भारत को स्वतंत्र कराने मं सफल रहें। आज सामाजिक पतन आपसी लड़ाई हो या वैश्विक स्तर पर हिंसा या पारिवारिक स्तर पर इन व्याप्त बुराइयों के पीछे लोगों का नैतिक पतन मुख्य रूप से जिम्मेदार है। मैं इस शोध आलेख के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास करूँगी कि वर्तमान परिस्थिति में गाँधी जी के नैतिक विचार (एकादश व्रत) समाज में कहाँ तक प्रासंगिक हैं और यह मानव तथा समाज कल्याण के लिए कितने सार्थक हैं।

शब्द–कुंजी–नैतिकता, धर्म, मानवसेवा, एकादश, वत, साध्य–साधन, सत्याग्रह, अहिंसा इत्यादि।

प्रस्तावना–

वर्तमान समय में जिस प्रकार वैश्विक स्तर पर व्याप्त हिंसा, मतभेद, बेरोजगारी धार्मिक कट्टरता, नृजातीयता, अस्पृश्यता जैसे अनेक मामलों में न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व स्तर पर एक तनावपूर्ण वातावरण का निर्माण कर रखा है जिसके कारण आज वैश्विक स्तर पर अशांति का माहौल देखने को मिलता है। आज मानव अपने मानवीय मूल्यों का त्याग कर स्वार्थी हो गया है जिसका जीवन का उद्देश्य केवल अपने हितों की पूर्ति मात्र रह गया है जिसने आज न सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व के सामने एक बड़ी समस्या को जन्म दे दिया है। उन समस्याओं का यदि विश्लेषण किया जाए तो ज्ञात होता है कि इन समस्याओं का मुख्य कारण नैतिकता का अभाव हो ज़ाना हो गया है। आज हमारे समाज में व्याप्त बुराइयों का दूर करने के लिए आवश्यकता है, नैतिकता की। नैतिक विचारों और मूल्यों के द्वारा ही विश्व में न केवल शांति बल्कि सांमजस्य भी स्थापित किया जा सकता है।

मोहनदास करमचन्द्र गांधी, जो कि एक युगप्रर्वतक रहे है जिनके नैतिक मूल्यों ने ही उन्हें 'महात्मा' की उपाधि दिलायी ह, जिसने भारत में राष्ट्रप्रेम, एकता, बंधुत्व, सौहार्द स्थापित करने का आजीवन प्रयास किया तथा भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध–आलेख द्वारा यह देखने का प्रयास होगा कि क्या गांधी के नैतिक विचार वर्तमान परिपेक्ष्य में समाज के लिए प्रासंगिक हो सकते है?

गांधी का नैतिक विचार उनकी दार्शनिक मान्यताओं पर ही आधारित है। गांधी ने नैतिकता का प्रयोग धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में किया वरन् उनका सम्पूर्ण जीवन ही नैतिक मूल्यों से उद्‌गमित होता है। गांधी के चिंतन व आचरण का मूल तत्त्व 'धर्म' रहा है वह नैतिकता और धर्म में गहरा सम्बन्ध स्वीकार करते है। उनके अनुसार धर्म वह है जो समग्र मानव अपेक्षाओं के अनुरूप सभी साम्प्रदायिक धर्मो को संमन्वित करता हुआ नीतिपूर्ण सामंजस्य के साथ सत्यता का स्वरूप प्रदान करता है।[1] नैतिकता गांधी के धर्म को परमावश्यक तत्त्व है। वे कहते हैं– "मैं वैसे किसी भी धार्मिक पंथ या मत को अस्वीकृत करता हूँ जो बुद्धिसम्मत न हो तथा जिसका नैतिकता से इन्द्र हो। मैं अबौद्धिक धार्मिक को सहन कर सकता हूँ। बशर्ते वह अनैतिक नहीं हो"[2] गांधी ने नैतिकता को धर्म का स्वरूप माना है वे कहते है" ज्योंहि हम नैतिक आधार खो देते है त्योंहि हम धार्मिक नहीं रह जाते है। अतः जहां पर नैतिकता को स्वीकार नहीं

किया जाता है वहां धर्म, धर्म नहीं रह जाता। अतः मनुष्य असत्यवादी, अभद्र, क्रुर तथा असंयमी होते हुए यह दावा नहीं कर सकता है कि वह ईश्वर को मानता है।'[3] गांधी के ईश्वरवादी विचार से ही मानव लक्ष्य का विचार निःसृत होता। गांधी ईश्वर को सृष्टिकर्ता रूप में विचारते हुए मानव आत्मा को मौलिक तथा स्वयंभू विचारते है। वह मानते है कि ईश्वर विश्व में व्याप्त है, प्रत्येक आत्मा उसी का अंश है इसलिए ईश्वर की प्राप्ति संन्यास आदि के द्वारा नहीं अपितु मानव सेवा के द्वारा ही संभव है इसलिए गांधी ने मानव–सेवा को ही परमधर्म स्वीकार है। अतः ईश्वर की सेवा का अर्थ मानव सेवा है। 'मानव–सेवा" से तात्पर्य किसी व्यक्ति–विशेष की सेवा नहीं है बल्कि मानव–सेवा का अर्थ, सम्पूर्ण मानवता की सेवा अर्थात् सभी का उदय 'सर्वोदय' से है। गांधी के नैतिक विचारों में सर्वोदय की संकल्पना अति महत्वपूर्ण है। गांधी ने अपने जीवन में सर्वोदय का संकल्प लेते हुए समाज के विभिन्न धर्म, वर्ग, जाति, लिंग को एक समान श्रेणी में रखा तथा उन्हें आपस में जोड़ने के लिए सर्वोदय का मार्ग चुना।

गांधी के लिए नैतिकता जीवन का स्त्रोत है। यहाँ तक कि व्यक्ति और समाज का अस्तित्व तथा विकास भी नैतिक पथ पर आधारित है। उनकी नैतिक विचारधारा का मूलतत्व है खुद की भलाई सबकी भलाई में है।' नैतिकता के मूल्यों को उन्होंने एकादश व्रत–सत्य, अहिंसा अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अभय, अस्पृश्यता निवारण, स्वदेशी, शारीरिक श्रम, सर्वधर्म–सम्भाव के माध्यम से बताया इन व्रतों को मानव कल्याण के लिए अनिवार्य बताया। इन सभी व्रतों में सत्य और अहिंसा को सबसे अधिक महत्व दिया।

गांधी के सम्पूर्ण नैतिकता का केन्द्र बिन्दु सत्य और अहिंसा के रूप में दिखाई देता हैं। गांधी ने किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग के रूप में सत्य एवं अहिंसा को चुना है। गांधी ने साध्य और साधन की औचित्यता के लिए सत्य को स्वीकार किया उनके अनुसार साध्य ही नहीं अपितु साधन भी पवित्र होना चाहिए गांधी ने साध्य के रूप सत्य और साधन के रूप में अहिंसा को चुना। वह मानते है कि सत्य मात्र वाणी और विचार तक ही सीमित नहीं हैं अपितु सुम्पूर्ण जीवन से सम्बद्ध है। सदाचार ही सत्य का नैतिक पक्ष है। सदाचार तप और त्याग से ही सम्भव है तप से आत्मशुद्धि होती है और त्याग से मोह तथा स्वार्थ की भावना से मुक्ति मिलती है। सत्य के दर्शन में मोह और स्वार्थ ही बाधक होते है इसलिए इनका त्याग कर सत्य की प्राप्ति सम्भव है। चूंकि सदाचार ही सत्य का व्यावहारिक पक्ष है, अतः सत्य का ज्ञान होने पर उसी के अनुसार कर्म होगा। उसके विपरीत कर्म करना सत्य के ज्ञानी के लिए असत्य है। ऐसी अवस्था जीवित मृत्यु

है। गांधी ने सत्य को ईश्वर तुल्य माना गांधी ने ईश्वर सत्य है के साथ–साथ 'सत्य ही ईश्वर है" कहना आरम्भ किया वह कहते है मैं जैसे–जैसे सत्य की ओर बढ़ता हूँ मेरा अन्तःकरण और शुद्ध होता जाता है और मेरे मन में सारे भेद मिटते जाते है।

गाँधी के नैतिक दर्शन में सत्याग्रह का महत्वपूर्ण स्थान है। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के प्रति आग्रह। सत्याग्रह का प्रयोग गांधी ने पहली बार दक्षिण अफ्रीका में 1907 ई0 में जब ट्रांसवाल विधायिका ने सभी एशिया निवासियों को पंजीकरण कार्ड की अवधारणा का कानून पारित किया तो प्रयोग किया और 1910 ई0 में इस आंदोलन में भाग लेने वालो के लिए टाल्सटॉय फार्म की स्थापना की। गांधी के इस सत्याग्रह का सफल परिणाम जून, 1914 में गांधी–स्मट्स समझौते के रूप में हुआ और गांधी जी ने भारत आकर भी चम्पारण आंदोलन (1917) में भी सत्याग्रह का सहारा लेकर अंग्रेजों से अपनी मांगे पूरी करवायी। सत्य पर टिके रहना और सत्य की प्राप्ति हेतु दृढ़तापूर्वक लगे रहना ही सत्याग्रह है। यह सत्य के अनुसंधान और उस पर पहुंचने का अनवरत प्रयास है।

'सत्याग्रह दयाबल, आत्मबल एवं करूणाबल है इस बल के प्रमाण हमें पग–पग पर दिखाई देते है।'[4] सत्याग्रह की–बुनियाद सत्य और अहिंसा पर है। यह मानव को सत्य के प्राप्ति हेतु अहिंसक संघर्ष के लिए जोरदार ढंग से प्रेरित करती है। 'गांधी के सत्याग्रह को अपनाने की पद्धति उपवास है। इसका स्वरूप 'त्याग' होना चाहिए विपक्षी पर नजायज दबाव डालना नहीं। यदि मांग पूरी न हो तो अन्ततः आमरण अनशन सत्याग्रही का अंतिम हथियार होना चाहिए। यह सत्याग्रही का अंतिम कर्त्तव्य है जिसे उसे निभाना है।"[5] 'गांधी के अनुसार सत्याग्रह आत्म–दुखभोग के सिद्धान्त का एक नवीन रूप है। दूसरों के बलिदान की तुलना में आत्म बलिदान अनंत गुणा अधिक श्रेयष्कर है। एक आत्म–बलिदानी यानि स्व–दुख भागी अपनी गलतियों से दूसरों को कष्ट नहीं पहुँचाता है।[6]

गांधी के नैतिक मूल्यों में अहिंसा का विशेष स्थान है गांधी जी ने इस शस्त्र का प्रयोग से न केवल भारत को स्वतत्रंता दिलायी बल्कि उपनिषदों, जैन तथा बौद्ध दर्शनों की भांति अहिंसा को प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिवार्य व्रत के रूप में इसका निष्ठापूर्वक पालन करना आवश्यक बताया। उन्होंने अहिंसा की जो व्याख्या की है यह बहुत व्यापक, युक्तिसंगत और संतुलित है। अंहिसा का साधारण अर्थ है 'हिंसा न करना'। उनके मतानुसार क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, विद्वेष तथा स्वार्थ से प्रेरित होकर किसी प्राणी को अपने

वचन अथवा कर्म द्वारा किसी प्रकार का कष्ट न पहुंचाना और कष्ट पहुंचाने का विचार भी न करना अहिंसा है। अंहिसा के इस निषेधात्मक अर्थ के अतिरिक्त गांधी के अनुसार उसका स्वीकारात्मक अर्थ भी सभी है प्राणियों के प्रति प्रेम, दया, सहानुभूति आदि सद्भावनाएं रखना। यथासम्भव उनकी सेवा तथा सहायता करना अहिंसा के व्रत का स्वीकारात्मक पक्ष है।

गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं का स्थायी समाधान केवल शान्तिपूर्ण अंहिसात्मक उपायों द्वारा ही किया जा सकता है। गांधी ने भारत की स्वतंत्रता के विषय में कहा कि "हिंसा हिन्दुस्तान के दुखों का इलाज नहीं, और उसकी संस्कृति को देखते हुए उसे आत्मरक्षा के लिए कोई अलग और ऊँचे प्रकार का शस्त्र काम में लाना चाहिए।"[7] वे कहते है कि केवल अहिंसात्मक उपायों द्वारा ही समस्त राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान हो सकता है।

अहिंसा का आधार मनुष्य का नैतिक अथवा आध्यात्मिक बल है, उसकी विवशता या दुर्बलता नहीं। उनका मत है कि विवशता और दुर्बलता के कारण, हिंसा से दूर रहना अथवा अन्याय सहन करते हुए प्रतिरोध न करना, अहिंसा नहीं, प्रत्युत कायरता है जो हिंसा से अधिक निकृष्ट और निदंनीय है। गांधी ने स्पष्टता कहा कि कायरता और हिंसा में से एक चुनना हो तो, हिंसा ही चुनना उचित होगा। नैतिक बल के अभाव में कायरता की अपेक्षा हिंसा को अधिक श्रेष्ठ मानते हुए उन्होने लिखा "मैने कई बार यह कहा है कि यदि हम कष्ट सहने की शक्ति अर्थात् अहिंसा द्वारा अपनी–अपनी स्त्रियों की तथा अपने उपासना स्थलों की रक्षा करना नहीं जानते है तो हमें संघर्ष करके इन सबकी रक्षा करनी चाहिए।"[8] स्पष्टता गांधी का यह मत उन शांतिवादियों से भिन्न है जो सभी परिस्थितियों में हिंसा का विराध करते हैं। कुछ विशेष परिस्थितियों में हिंसा का समर्थन करते हुए भी गांधी जी नैतिक दृष्टि से अहिंसा को ही सर्वोच्च स्थान देते है। उनके विचार में मनुष्य को यथा संभव अहिंसा के व्रत का अवश्य पालन करना चाहिए द्य अहिंसा ही मानव के लिए सर्वोच्च धर्म है। गांधी ने अस्तेय को अंहिसा तथा सत्य के सहायक व्रत के रूप में स्वीकार किया तथा इसे बहुत व्यापक अर्थ में ग्रहण किया। अस्तेय का सामान्य अर्थ चोरी न करना है परन्तु गाँधी इसका व्यापक अर्थ बताते हुए कहते हैं कि शारीरिक, मानसिक तथा वैचारिक सभी प्रकार की चोरी से सदा दूर रहना .हो अस्तेय व्रत है। अस्तेय को गाँधी जी ने मनुष्य के नैतिक नियम के रूप में स्वीकार किया है।

गाँधी अपरिग्रह को अन्य व्रतों की भांति व्यापक अर्थ में लेते हैं वह मानते हैं कि अपरिग्रह के द्वारा समाज का आर्थिक संघर्ष को रोका जा सकता है और शांति स्थापित की जा सकती है। अपरिग्रह का सिद्धान्त गाँधी के ट्रस्टीशिप या प्रन्यास सिद्धान्त में विस्तार रूप से देखने को मिलता है वे कहते हैं कि सारी सम्पत्ति ईश्वर की है। यदि किसी के पास आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति है तो वह एक ट्रस्टी के रूप में समाज कल्याण के लिए ही खर्च करे। ट्रस्टीशिप सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य सम्पत्ति का उत्तरदायित्वविहीन स्वामी नहीं है वरन् उसे अपनी सम्पत्ति का उपयोग जनहित के लिए करना चाहिए।

एकादश व्रतं में गाँधी ने ब्रह्मचर्य को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया और इसकी व्यापक परिभाषा दी वे ब्रह्मचर्य को केवल कामेच्छा निरोध तक ही सीमित नहीं मानते हैं। वे कहते हैं कि 'मन, वचन एवं कर्म से सभी समयों में तथा सभी स्थानों पर अपनी समस्त इंद्रियों का पूर्ण संयम अथवा नियंत्रण ही ब्रह्मचर्य है।[9] अस्वाद भी ब्रह्मचर्य के अन्तर्गत आ जाता है।

गांधी का मत है कि सच्ची अंहिसा अभय से ही सम्भव है। भय का अभाव अभय कहलाता है। गांधी कहते हैं कि अहिंसक के रूप में यह एक सद्गुण है जो आवश्यक है यह वीरों और साहसी का गुण है।

गांधी के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को शारीरिक श्रम करना आवश्यक है। ऐसा नहीं करने वह दूसरों के शरीर श्रम पर जीवन यापन करेगा। इसे गांधी ने चोरी माना है। अतः आत्मनिर्भर होने के लिए और चोरी से बचने के लिए शारीरिक श्रम आवश्यक है गांधी ने एकादश व्तों में स्वदेशी को महाव्रत माना। उनका मानना है कि अपने देश से 1 देश से प्रेम ईश्वर से प्रेम है और यही स्वधर्म है। असहयोग आंदोलन के दौरान गांधी ने इसी व्रत का पालन करते हुए स्वयं 'कैसर–ए–हिन्द" की उपाधि त्यागी और उसी समय सभी को स्वदेशी चीजों की ओर प्रेरित किया। जिसके परिणाम शिक्षा से लेकर न्याय तक के क्षेत्र में देखने को मिले। स्वदेशी का तात्पर्य दूसरे देश से घृणा नहीं है।

गांधी ने अस्पृश्यता को समाज के लिए एक कोढ जैसी बीमारी माना गांधी ने इसका हमेशा विरोध किया। 1932 में सांप्रदायिक प्रचंग के खिलाफ गांधी ने जेल से आन्दोलन शुरू किया। वह कहते हैं कि सभी ईश्वर की ही सृष्टि है तथा भेद नहीं अभेद का भाव ही धर्म है।

समाज में समता का भाव लाने के लिए गांधी ने सर्वधम समभाव को चुना। गांधी ने सर्वधर्म समभाव को सहिष्णुता का अभिप्राय माना वह कहते हैं सहिष्णुता का अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी आस्थाओं के प्रति उदासीन हो जाये बल्कि यह उसके प्रति और अधिक एवं शुद्ध प्रेम को दर्शाता है क्योंकि सभी को ईश्वर ने ही बनाया है और ईश्वर प्रेम ही, मानव प्रेम है। हमें सभी धर्मो, वर्गों जाति के प्रति आदर भाव रखना चाहिए।

निष्कर्ष–

गांधी का नैतिक विचार, दर्शन और संदेश वर्तमान के लिए बहुत सार्थक है। हमें कहना चाहिए कि वे ही तो एक धनात्मक तत्व हैं जो कि आधुनिक सभ्यता को सर्वनाश से बचा सकते हैं। स्थाई मान्यताएं जैसे स्व से पूर्ण सेवा, संचय से पूर्व त्याग और दूसरों के लिए चिंता बहुत ही तेजी से समाप्त होती जा रही है और उनका स्वार्थपरता, लालच, अवसरवाद, धोखा चालाकी और झूठ के द्वारा लिया जा रहा है। इन सब ने टन्दों और संघषषों को जन्म दिया है और सहिष्णुता तथा मानव प्रेम के उच्च आदर्श कमजोर पड़ते जा रहे हैं। इस भयावह तस्वीर को पूर्ण करने के लिए शस्त्रीकरण शस्त्र मानव जाति के अस्तित्व के लिए खतरा बने हुए हैं। बड़े पैमाने पर विनाश किया गया और नई तकनीकियों का विकास किया जा रहा है। कानून की सभी प्रणालियों, करारों संधियों एवं गठबंधनों को मानवीय मेलजोल ओर शांति स्थापित करने में सफलता नहीं मिली है।

गांधी दर्शन के बिना शान्ति एवं मानव अधिकारों की संकल्पना बेमानी होगी क्योंकि गांधी जी ने जिस इंसानियत की बुनियादी अवधारणा का बीज बोया उसकी आधारशिला सत्य, अहिंसा ब्रह्मचर्य, शारीरिक श्रम जैसे एकादश ब्रतों पर आधारित है। यह सर्वविदित है कि गांधी जी का जीवन स्वयं के लिए नहीं था, बल्कि दूसरों के लिए समर्पित था। जिसका जीवन हमेशा दूसरों के लिए रहा हो, उससे अधिक परमार्थ व मानव अधिकार की बात करने वाला दूसरा कोई व्यक्ति नहीं हो सकता है। उन्हें भारत ही नहीं अपितु विश्व में शान्ति का अग्रदूत, दलितों का मसीहा तथा सेवाभाव को प्रेरित करने वाले जननायक के रूप में जाना जाता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस अशांति के वातावरण में गांधी के नैतिक विचार तथा दर्शन एक आशा की किरण प्रस्तुत करते हैं। उनके मूल्य एवं सिद्धान्तों, आदर्श और उपदेश मानवता को आंतरिक एवं बाह्य शांति तक पहुंचने के लिए दिशा प्रदान करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. महात्मा गांधी, हरिजन, 10–02–40, पृ0– 445

2. यंग इण्डिया 21–07–20, पृ0– 4

3. गांधी, एम0क0 सम्पूर्ण गांधी वाडमय खंड–8, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1962, पृ0–22–23

4. गाँधी, एम0के० हरिजन 18 फरवरी, 1933

5. वही, खंड–18, 1965, पृ0– 133

6. गांधी, यंग इण्डिया, जनवरी 1921, पृ0–5

7. यंग इण्डिया मार्च पृ० 222

8. महात्मा गांधी, 'हिन्दू धर्म', पृ० 137

9. गांधी एम0के0 हरिजन 18 फरवरी , 1938